★ राजनीति दर्शन तथा राजनीतिशास्त्र में समानता/संबंध

राजनीति दर्शन तथा राजनीतिशास्त्र की परिभाषा से यह तो स्पष्ट है कि राजनीतिविज्ञान तथा राजनीति दर्शन दोनों का ही संबंध राज्य तथा सरकार के साथ है। यद्यपि दोनों एक ही समस्या का अध्ययन करते हैं तथापि उनके क्षेत्र, उनकी पद्धति, कार्य तथा दृष्टिकोण में बहुत अन्तर है। यद्यपि दोनों ही राजनीतिक आदर्शों जैसे मार्क्सवाद, समाजवाद, साम्यवाद आदि का अध्ययन करते हैं। दोनों राजनीतिक अवधारणाओं जैसे समानता, स्वतंत्रता, अधिकार, इच्छा, कर्तव्य, न्याय शक्ति आदि का अध्ययन करते हैं; मगर उनके अध्ययन की पद्धति में बहुत अन्तर है।

★ राजनीतिदर्शन तथा राजनीतिशास्त्र में निम्नलिखित भेद पाए जाते

(1) दोनों के अध्ययन के विषय अलग-अलग हैं — राजनीतिशास्त्र में हम केवल अतीत तथा वर्तमान के राजनीतिक विचारकों से ही सम्बन्ध नहीं रखते हैं, वरन अतीत तथा वर्तमान में सरकार की कार्य प्रणाली की भी चर्चा करते हैं। इस प्रकार, राजनीतिशास्त्र में राज्य तथा सरकार के सैद्धान्तिक पक्ष का ही महत्व नहीं होता वरन व्यवहारिक पक्ष की भी महत्ता होती है। मगर राजनीति दर्शन में ऐसा नहीं होता है। राजनीति दर्शन का संबंध राज्य तथा सरकार की व्यवहारिक कार्य प्रणाली से नहीं है।

इस प्रकार, राजनीतिदर्शन का संबंध राजनीतिक संस्थाओं से उतना नहीं है जितना कि इन संस्थाओं के मूल में जो विचार तथा उद्देश्य हैं, उनसे है। यह राजनीतिक घटनाओं तथा संस्थाओं के आधारभूत, लक्ष्यों, उद्देश्यों एवं विचारों का अध्ययन करने का प्रयास करता है ताकि यह जान सके कि वे कौन से कारण हैं जिनसे ये घटनाएँ घटी हैं। अतः राजनीतिदर्शन की यह चेष्टा है कि वे घटनाओं के "क्यों" और "क्या" का उत्तर देते। "Political Philosophy is not much interested in how things occur as it is in what occurs and why."

इस प्रकार, रा०द० का लक्ष्य है - राज्य और सरकार के विभिन्न पहलुओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना तथा राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण करना। अतः रा०शा० का क्षेत्र रा०द० से अधिक व्यापक है।

(2) राजनीतिशास्त्र तथा राजनीति दर्शन के कार्यों में भिन्नता — रा०शा० का कार्य "व्यवहारिक" (Pragmatic) है क्योंकि यह राज्य चलानेवाले यंत्र अर्थात सरकार की व्यवहारिक कार्य-प्रणाली का भी अध्ययन करता है। रा०शा० में राजनीतिक तथ्यों का वर्णन किया जाता है, राजनीतिक तथ्यों की

व्याख्या ~~की~~ के लिए रा० सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है। रा०शा० अन्य प्राकृतिक वैज्ञानिकों की भाँति तथ्यों की व्याख्या की चेष्टा करता है। उसका लक्ष्य है - तथ्यों की व्याख्या इसके अतिरिक्त राज० शा० व्यवहारिक भी है। यह राज्य और सरकार के व्यवहारिक कार्यों का भी अध्ययन करता है। इसके विपरीत रा० दर्शन का कार्य है - राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण। तथा विश्वासों की समीक्षात्मक मूल्यांकन विश्वासों से तात्पर्य है किसी विश्वास के स्वीकारने या नकारने का विवेकपूर्ण आधार बनाने की चेष्टा करना। रा० दार्शनिक यह जानने का प्रयत्न करता है कि कहाँ तक और किन युक्तियों के आधार पर पुराने विश्वासों का औचित्य सिद्ध किया जा सकता है। किन बातों में पुराने और नए विश्वास में असंगति है और क्या विसंगति है। क्या उन विसंगतियों का किसी नई धारणा से समन्वय संभव है?" रा०दर्शन का कार्य यही है।

(3) राजनीति दर्शन का दूसरा कार्य है राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण। किसी विश्वासों की तर्कसम्मतता की परीक्षा के लिए उसमें जिन पदों का उल्लेख हुआ है उनके अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। अवधारणाओं को स्पष्ट करने के पश्चात रा० दर्शन, राजनीतिक कार्यों, क्रियाओं, आदर्शों, मूल्यों का समीक्षात्मक विवरण देता है। इस कार्य का विवरण हमें भारतीय राजनैतिक विचारक जैसे, राजा राममोहन राय, दयानन्दसरस्वती, गाँधीजी, विवेकानन्द, तथा अरविन्द के दर्शन में मिलता है। राजनीति-दर्शन का यह कार्य आधुनिक पाश्चात्य विचारक जैसे Voltaire, Karl Marx, Kropotkin के रचना में पूर्णरूप से झलकता है।

(4) राजनीति दर्शन का रचनात्मक पक्ष (Constructive aspect) →
राजनीति दर्शन का तीसरा कार्य रचनात्मक पक्ष भी है। राज० दर्शन राजनीतिक जीवन के अर्थ तथा उद्देश्यों से संबंधित है। यह राज्य के लक्ष्य, आदर्शों तथा मूल्यों का अध्ययन करता है। रा०द० के दो पक्ष है - रचनात्मक तथा समीक्षात्मक
इसका समीक्षात्मक पक्ष है - रा०वि० के सिद्धान्त तथा पद्धतियों की यथार्थता से संबंध तथा रचनात्मक पक्ष है - राजनीतिक आदर्शों की यथार्थता से संबंध।
इस प्रकार राज० दर्शन तथा रा०शास्त्र के कार्यों में भिन्नता है।

'5) राजनीतिशास्त्र तथा राजनीति दर्शन के दृष्टिकोण में अन्तर
राजनीति दर्शन का राजनीतिशास्त्र से भेद करते हुए कुछ विचारकों ने राजनीतिशास्त्र को वर्णनात्मक या यथार्थविज्ञान कहा है और रा० दर्शन को आदर्शमूलक। राजनीतिशास्त्र में तथ्यों को जैसा

के जैसे हैं उनका उसी तरह से अध्ययन किया जाता है, परन्तु राजनीति दर्शन में आदर्शों के आधार पर ही उन तथ्यों का मूल्यांकन होता है। इसलिए रा०शा० का राजनीतिक तथ्यों के विश्लेषण से सम्बन्ध है, पर राजनीति दर्शन का उनके मूल्यांकन से। यही कारण है कि प्लेटो, मूर, रूसो, कांट, मैक्यूवेली, ग्रीन बोसांके आदि अपनी कृतियों में राजनीति को बहुत ऊँचाई तक ले गए हैं, क्योंकि उन्होंने राजनीति में आदर्शों की स्थापना की बात कही है तथा आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने की चेष्टा की है।

इस प्रकार, राजनीति-दर्शन का दृष्टिकोण आदर्शमूलक है और राजनीति विज्ञान का वर्णनात्मक। राजनीति-दर्शन राज्य तथा सरकार के आदर्शों की चर्चा करते हुए यह बतलाता है कि उसे कैसे होना चाहिए।

6) राजनीतिशास्त्र एवं राजनीति-दर्शन की पद्धति भिन्न है :-
राज०शा० की पद्धति वैज्ञानिक पद्धति है। रा०शा० निरीक्षण, प्रयोग, सादृश्यानुमान की पद्धति का प्रयोग करता है। रा०द० प्रत्येक राजनीतिक घटना को सम्पूर्ण का एक अंश मानते हुए साक्षात प्रत्यक्ष, अन्तः अनुभूति तथा तर्क के आधार, पर उसकी व्याख्या करता है। इस प्रकार, इसकी पद्धति समीक्षात्मक है।

7) दोनों ही अलग-अलग बातों पर बल देते हैं :- रा०शा० राजनीतिक घटनाओं के सैद्धान्तिक पक्ष पर बल देता है तो रा०द० उसके समीक्षात्मक पक्ष पर बल देता है। रा०द० राजनीतिक घटनाओं के अर्थ एवं उद्देश्य की खोज करता है। रा०शा० राजनीतिक संस्थाओं का अध्ययन करता है, किन्तु राजनीति-दर्शन राज्य तथा आदर्श को निर्धारित करता है। जहाँ रा०शा० तथ्यों तथा पद्धतियों की महत्ता पर बल देता है वहीं राजनीति-दर्शन उनके मूल्यों एवं पद्धतियों से संबंधित है।

इस प्रकार, राजनीतिशास्त्र एवं राजनीति-दर्शन में कई प्रमुख भेद हैं। (रा० शा०) (रा० द०)

Political Sci and P.P — Relation ⇒

~~भिन्नता~~ ~~इस~~ ~~Political~~ Political Science Political Philosophy

संबंध - यद्यपि रा० शा० तथा रा०द० में कई अंतर हैं, तथापि दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं तथा दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। रा०शा० तथ्यों का अध्ययन करता है। मूल्यों का निर्धारण नहीं करता है। यही यह कार्य रा०द० के क्षेत्र के अन्दर आता है। रा०द० राज्य तथा सरकार के आदर्शों का निर्धारण करता है जिसके लिए पहले यह राज्य तथा सरकार के कार्यों की आलोचना करता है।

इस प्रकार, राजनीतिक आदर्शों के निर्धारण के लिए राजनीतिशास्त्र रा० दि० पर आश्रित है। उसी प्रकार, राजनीति-दर्शन भी रा० शा० पर निर्भर करता है। कोई भी दार्शनिक शून्य में काम नहीं कर सकता। उसे राजनीतिशास्त्र द्वारा सम्पादित तथ्यों के आधार पर ही कार्य करना है। उसे देश में प्रचलित राजनीतिक परिस्थितियों एवं संस्थाओं पर ही कार्य करना है। एक रा० दार्शनिक का संबंध न केवल लक्ष्य या अंत से है वरन साधनों से भी है। प्लेटो ने न्याय के आदर्श की कल्पना की, किन्तु उसकी प्राप्ति के लिए उसे उन संस्थाओं का सहारा लेना पड़ा जिनके माध्यम से न्याय की प्राप्ति हो सके। इस प्रकार, रा० शा० एवं रा० दर्शन एक दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे पर आश्रित हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि एक दार्शनिक सिद्धान्तकार हो सकता है, मगर यह आवश्यक नहीं है कि एक सिद्धान्तकार दार्शनिक हो। ~~कोई~~ कई प्रमुख अमरीकन लेखक जैसे Charles Merriam और Harold Lasswell प्रमुख सिद्धान्तकार हैं, पर Hobbs और लॉक जैसे दार्शनिक नहीं। अतः यद्यपि राजनीतिशास्त्र के उन धारणाओं के स्वरूप, उनकी व्याख्या या वर्णन से सम्बन्ध है वही राजनीति दर्शन उनकी सीमा और मूल्यांकन करता है।